Sanskrit (Honours)
B.A (2nd Part)

Date: 14/8/2020
डॉ० कार्तिकी लता मिश्र
अतिथि शिक्षक
किशन सेनेटरी
आर० बी० एल० कॉलेज ऑफ एजुकेशन
के अन्तर्गत

लघुसिद्धान्तकौमुदी (अजन्तस्त्रीलिङ्गप्रकरणम्).

नदी- कहते हुए ज्ञानस्रोत के रूप में स्त्रीत्व विवक्षा में दीर्घ ईकारान्त नदी शब्द को इयङ् या पार्श्व आदेश होते हैं। 'अचोऽन्त्यादि टि' (अच् के प्रातिपदिक अन्त्य से पूर्व वर्ण तथा शेष भाग टि संज्ञक होता है) इकार प्रातिपदिक का अन्त्य इकार के साथ स्त्रीत्व विवक्षा में 'ङीष्' प्रत्यय होने से तथा 'यचि भम्' (यकारादि तथा अचादि प्रत्यय परे होने पर पूर्व भाग भ संज्ञक होता है) इकार की भ संज्ञा एवं 'यस्येति च' (भ संज्ञक इकार का लोप होता है) इकार का लोप होने पर 'नद्यृतश्च' (ऋकारान्त तथा ईकारान्त अङ्ग से परे जस् को शी आदेश होता है) जस् को शी आदेश होने पर 'नदी + अ + इ' इस स्थिति में 'आद्गुणः' (अकार या आकार से इ, उ, ऋ, ऌ परे होने पर पूर्व तथा परे के स्थान पर गुण एकादेश होता है) इ के स्थान पर 'ए' होकर 'नदी + ए' इस स्थिति में 'एचोऽयवायावः' (एच् के स्थान पर क्रमशः अय्, अव्, आय्, आव् आदेश होते हैं) से 'ए' के स्थान पर 'अय्' आदेश होकर 'नदी + अय्' इस स्थिति

में 'इच्छा' प्रत्यय होने पर इच्छा (नदी + इच्छा) के आगे आया (या) होने के साथ षष्ठ (५) होने पर अर्थात् 'गयो' यह रूप सिद्ध होता है।

भाषा:- बहुत हुए ग्रन्थकार के मत में स्त्रीलिंग विकल्प से 'नदी' शब्द भी इकारान्त होने पर सप्तमी के साथ 'अधिकरणकारकेषु प्रत्ययः प्रातिपदिकार्थ लिङ्ग के प्रातिपदिक होने पर' इस सूत्र से 'ङि' प्रत्यय तथा 'बहुषु बहुवचनम्' इस से पंचमी विभक्ति के एकवचन में 'इसि' प्रत्यय होने पर इकार को तकारादेश: एवं इस की उपदेशेऽजनुनासिक इत् इस से इत् संज्ञा एवं 'तस्य लोपः' इस से उसके लोप होने पर नदी + आत् इस स्थिति में 'आङो नास्त्रियाः' इस से आगामी टकित् स्त्री प्रत्यय से विधान किया हुआ टित् होने से इसि के पहले 'आट्' का आगम होने एवं इस की सकार की 'इत् संज्ञा तथा तस्य लोपः' इस से उसके लोप होने पर 'नदी + आ + आत्' इस स्थिति में 'आटश्च' इस से वृद्धि 'अधि' 'आ' होने पर 'नदी + आत्' इस स्थिति में हुई यणादि इस से यण् एवं सकार का हल् विभक्ति होने से लोप: यह रूप सिद्ध होता है।

Rakesh Ranjan
14/8/2020